# प्रारम्भिक भाषा का शिक्षण और साक्षरता | प्रासंगिकता का प्रश्न

शैलजा मेनन

भारतीय कक्षाओं में एक पेचीदा समस्या यह है कि साल-दर-साल जिज्ञासु, सतर्क और सामाजिक रूप से सक्षम बच्चे हमारी कक्षाओं में आते हैं और पता नहीं हम उन्हें किस तरह से पढ़ाते हैं कि उनमें से कई प्रतिशत बच्चे स्कूली शिक्षा के शुरुआती तीन वर्षों के भीतर ही सीखने में रुचि खो देते हैं। तो फिर इसमें आश्चर्य की क्या बात है कि हमारे देश में पिछले कई सालों में बड़े पैमाने पर जितने भी आकलन किए गए, उनसे यह पता चलता है कि कई बच्चे बुनियादी स्तर पर पढ़ या लिख भी नहीं सकते हैं, भले ही वे ऊँची कक्षाओं में चले गए हों? प्रख्यात मनोभाषाविज्ञानी, जिम जी(Jim Gee), ने इस विसंगति की ओर ध्यान दिलाया है जो अमरीकी कक्षाओं में भी नियमित रूप से होती है : जो बच्चे अँग्रेज़ी वर्णमाला के छब्बीस वर्णों का (और उन्हें पढ़ने के लिए लागू करने के नियमों का) पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हुए सालों बिताते हैं, वही बच्चे उस समय बड़े चमत्कारी रूप से सैकड़ों अमूर्त प्रतीकों और नियमों को कुछ ही हफ़्तों में सीख लेते हैं जब आप उन्हें खेलने के लिए वीडियो गेम देते हैं!

इस बात से मुझे 9 साल की गीता[i] की याद आती है जिससे हम भारतीय भाषाओं के साक्षरता अनुसन्धान (Literacy Research in Indian Languages (LiRIL) study)[ii] का संचालन करते समय मिले थे। गीता वरली जनजाति की है और महाराष्ट्र के एक आदिवासी इलाके में रहती है। जब हम उससे मिले, उस समय वह गाँव के स्कूल में चौथी कक्षा में पढ़ती थी और बुनियादी मराठी भाषा को समझ और बोल सकती थी, जो उसके स्कूल की भाषा भी थी। होनहार, सतर्क और सक्षम गीता ने अपने घर और दो छोटे भाई-बहनों की ज़िम्मेदारी सम्भाल ली थी क्योंकि उसके माता-पिता काम पर जाते थे। वह जिज्ञासु और कुतूहली थी, शोधकर्ता से कई सवाल पूछ रही थी और बहुत सारी चीज़ें समझा रही थी - कौन कहाँ रहता है, कहीं जाने के लिए कौन-सा रास्ता सबसे छोटा है, भोजन न मिले तो कौन-से फल और जड़ें खाने के लिए सुरक्षित हैं, पानी को छानकर कैसे पीने के लायक बनाना चाहिए आदि! वह सवालों और सूचनाओं का भण्डार थी, एक उत्सुक प्रेक्षक, कड़ी मेहनत करने वाली, अपनी माँ को खाना बनाने, साफ़-सफ़ाई करने, कपड़े धोने आदि में मदद करने वाली लड़की। वह आलसी नहीं थी। विरक्त नहीं थी। मन्दबुद्धि नहीं थी। फिर भी साढ़े तीन साल की औपचारिक पढ़ाई के बाद भी गीता अच्छी तरह से पढ़ या लिख नहीं सकती थी।

मैं देश भर में विभिन्न कक्षाओं के साथ काम करती हूँ और अपने काम के दौरान गीता जैसी कई लड़कियों-लड़कों से मिलती हूँ - ऐसा क्यों हो रहा है?

**हम क्या ग़लत कर रहे हैं?**

यह स्पष्ट है कि हम उस प्राकृतिक बुद्धिमत्ता, जिज्ञासा और जुड़ाव से अलग हो रहे हैं, जिसे लेकर छोटे बच्चे हमारी कक्षाओं में प्रवेश करते हैं और साथ ही अधिगम को उनके लिए बहुत प्रासंगिक या सुलभ नहीं बना रहे हैं। गीता जैसे बच्चों को अपने सामूहिक ध्यान के केन्द्र में रखते हुए मैं इस लेख में तीन ऐसी ठोस चीज़ों का प्रस्ताव रख रही हूँ जिन्हें हम प्रारम्भिक भाषा कक्षाओं में अलग तरीक़े से कर सकते हैं :

1. एक बहुभाषी वातावरण बनाएँ
2. बच्चों के भाषा सीखने के शुरुआती प्रयासों को प्रोत्साहित करें
3. भाषा की कक्षा में अर्थ-निर्माण को सर्वप्रमुख मानें

**एक बहुभाषी वातावरण बनाएँ**

छोटे बच्चे भाषा की कक्षा के लिए अपने साथ एक अद्भुत संसाधन लेकर स्कूल में आते हैं, जो है उनके घर की भाषा। यह वही भाषा है जिसमें वे स्कूल आने से पहले सोचना, तर्क करना, खोज करना, बहस करना, वर्णन करना और बातचीत आदि करते रहे हैं। यह उनके रिश्तों की भाषा है, उनकी भावनाओं की भाषा है। वे इस भाषा के मूल व्याकरण को जानते हैं और इसमें उनका शब्द-भण्डार भी काफ़ी विकसित होता है।

लेकिन फिर भी, कई मामलों में ऐसा होता है कि जब वे स्कूल आते हैं तो हम उनसे कहते हैं कि अपनी चप्पलों के साथ-साथ अपने घर की भाषा को भी कक्षा के बाहर छोड़ आएँ! आदर्श रूप से देखा जाए तो बच्चे की मातृभाषा ही उसकी शिक्षा का माध्यम होनी चाहिए (Cummins, 2001)। इससे उसे न केवल यह समझने में मदद मिलेगी कि क्या पढ़ाया जा रहा है बल्कि अपने विचारों को सम्प्रेषित करने और अपनी सांस्कृतिक पहचान और विरासत पर गर्व करने का मौका भी मिलेगा। मातृभाषा में पढ़ाने का मतलब यह नहीं है कि बच्चों को अपनी मातृभाषा तक ही सीमित रखा जाए! बच्चे के घर की भाषा को स्वीकार करते हुए भी उसे अन्य भाषाओं जैसे स्कूल की भाषा, अँग्रेज़ी और परिवेश की अन्य प्रासंगिक

भाषाओं से भी परिचित कराया जा सकता है।

लेकिन कई कारणों से पूरे भारत के अनेक स्कूलों में बच्चों को उनकी मातृभाषा में नहीं पढ़ाया जाता है। झींगरन (2009) ने अनुमान लगाया है कि भारतीय स्कूलों में चार में से एक बच्चे को घर और स्कूल की भाषाओं के बीच मेल न होने के कारण सीखने की, सामान्य से लेकर गम्भीर समस्या का सामना करना पड़ता है। शिक्षा के माध्यम के बारे में निर्णय लेने का अधिकार हर शिक्षक के हाथ में नहीं होता और एक ही कक्षा के भीतर कई मातृभाषाओं का उपयोग किया जाता है। जिस स्कूल में विद्यार्थी कई ऐसी भाषाएँ बोलते हैं जो शिक्षा के आधिकारिक माध्यम से अलग हैं, वहाँ पर भी ऐसे सरल तरीक़े अपनाए जा सकते हैं जिनसे वे ख़ुद को सहज महसूस करें। कुछ तरीक़े यहाँ सूचीबद्ध किए गए हैं।[iii]

*कक्षा में बहुभाषी प्रिंट सामग्री का उपयोग करें*

यह सुनिश्चित करें कि कक्षा में कई भाषाओं में प्रिंट सामग्री प्रदर्शित की गई है। इस सामग्री में कक्षा के विभिन्न हिस्सों के नाम के लेबल, क़िताबों, कहानियों, कविताओं आदि को शामिल किया जा सकता है। इससे बच्चों को बेहतर तरीक़े से समझने में तो मदद मिलेगी ही, साथ ही उन्हें यह भी महसूस होगा कि उनकी भाषा को कक्षा में स्वीकार किया गया है और उसे महत्त्व दिया गया है। यदि स्थानीय भाषा की कोई लिपि नहीं है, तो घर की भाषा में उपलब्ध कहानियों, गीतों और कविताओं को शिक्षक के सामने बोलकर व्यक्त किया जा सकता है जिसे वे क्षेत्रीय भाषा (शिक्षण का माध्यम) की लिपि में लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कर सकते हैं।

*घर की भाषा में बोलने और अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करें*

यदि बच्चों को अपने घर की भाषाओं में बोलने की अनुमति दी जाए तो उनका जुड़ाव बढ़ेगा और वे कहीं अधिक बातें करेंगे। यदि शिक्षक बच्चे के घर की भाषा समझते हैं तो वे उस भाषा में बच्चे को जवाब दे सकते हैं; यदि नहीं, तो किसी भाषा मध्यस्थ की पहचान की जा सकती है (जैसे कोई बड़ा विद्यार्थी, समुदाय का कोई सदस्य या सहपाठी) जो शिक्षक को बच्चे के साथ बातचीत करने में मदद कर सके।

*बच्चों को बोलने और लिखने में भाषाओं का मिश्रण करने की अनुमति दें*

इससे उन्हें अपनी जानी-पहचानी शब्दावली और व्याकरण का उपयोग करते हुए अपनी सोच को पूरी तरह से व्यक्त करने में मदद मिलेगी, और साथ में वे नई भाषाओं के कुछ शब्दों या वाक्य-रचना को मिलाने के प्रयोग भी कर सकते हैं। गार्सिया और वेई (Garcia & Wei, 2014) ने तर्क दिया है कि अधिकांश द्विभाषी और बहुभाषी लोग भाषाओं का मिश्रण करते हैं और धाराप्रवाह रूप से भाषा का उपयोग करते हैं; इसी तरीक़े की सहायता से छोटे बच्चों को नई भाषा सिखाई जा सकती है।

अन्त में दिए चित्र में दिखाया गया है कि कैसे चौथी कक्षा की एक बच्ची ने अपनी मातृभाषा मराठी के ज्ञान का उपयोग नई स्कूली भाषा यानी अँग्रेज़ी सीखने के लिए किया।[iv]

**बच्चों के पढ़ने और लिखने के शुरुआती प्रयासों को प्रोत्साहित करें** [v]

जब गीता जैसे छोटे बच्चे स्कूल आते हैं तो उन्हें अपने घर की भाषाओं से स्कूल की भाषाओं में तालमेल बनाने के अलावा पढ़ना और लिखना भी सीखना होता है। कई स्कूल छोटे बच्चों को पहले अक्षर (वर्णमाला) पढ़ना-लिखना सिखाते हैं, फिर शब्द, फिर वाक्य और अन्त में अनुच्छेद पढ़ना सिखाते हैं। सामान्यतः मौखिक गतिविधियाँ, कविता वाचन तक सीमित होती हैं। स्कूलों में बच्चों को भाषा से परिचित कराने के यह तरीक़े अनुत्पादक हैं क्योंकि वे बोलने, सुनने, सोचने और अभिव्यक्त करने की उन क्षमताओं का उपयोग नहीं करते जिन्हें बच्चे अपने साथ कक्षा में लाते हैं।

तो फिर बच्चों को हम कौन-से अलग तरीक़े से भाषा सिखा सकते हैं?

*जो मायने रखता है उससे जोड़ना*

कई दशकों का संचित ज्ञान हमें बताता है कि बच्चे ऐसे सन्दर्भों में अवलोकन, प्रयोग और प्रयत्न-त्रुटि के माध्यम से भाषा सीखते हैं जो उन्हें सार्थक और दिलचस्प लगती हैं। इसलिए वे कुछ ही हफ़्तों में वीडियो गेम में महारत हासिल कर लेते हैं, लेकिन सालों तक वर्णमाला के अक्षर नहीं सीख पाते! भाषा की कक्षा में हमें बच्चों को उन चीज़ों के साथ जोड़ना चाहिए जो उनके लिए मायने रखती हैं। शिक्षक ऐसा कैसे कर सकते हैं?

*मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करें*

साझा-समय के दौरान बच्चों से कहा जा सकता है वे कुछ ऐसा साझा करें जिसमें उन्हें दिलचस्पी हो। उनके सामने कहानी पढ़ी या सुनाई जा सकती है और उसके बाद उस पर चर्चा की जा सकती है। उन्हें किसी फील्ड ट्रिप पर ले जाया जा सकता है, जिसके बाद उस पर चर्चा हो सकती है या समुदाय के किसी व्यक्ति को बच्चों से बात करने के लिए कक्षा में आमंत्रित किया जा सकता है। इन सभी अभ्यासों का लक्ष्य यह होना चाहिए कि बच्चे सोचें, संवाद करें, एक-दूसरे को सुनें और ख़ुद को अभिव्यक्त करें। जैसा कि पहले बताया गया है, बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपनी घर की भाषाओं में बोलें या भाषाओं को मिलाकर बोलें। इससे संज्ञानात्मक क्षमता, शब्दावली विकास और नई भाषाओं के साथ-साथ उनके आस-पास की दुनिया के बारे में ज्ञान बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। बच्चों से यह पूछना चाहिए कि वे चीज़ों के बारे में कैसा महसूस करते हैं – फिर चाहे वह कोई पुस्तक हो,

कहानी हो या कोई अनुभव – इससे शिक्षक को उन बिन्दुओं को समझने में मदद मिलेगी जिनके चलते जुड़ाव नहीं बन पा रहा है और साथ ही बच्चों को अपने विचार और भावनाओं दोनों को व्यक्त करने का अवसर मिलेगा।

*पढ़ने और लिखने के साथ प्रयोग करने के अवसर प्रदान करें*

यदि बच्चों को प्रतिदिन चित्र-पुस्तकों के पन्ने पलटने दिए जाएँ तो भले ही वे सभी अक्षर या शब्द न पढ़ पाते हों, फिर भी वे पृष्ठ पलटेंगे, चित्र देखेंगे, एक-दूसरे के साथ चर्चा करेंगे (यदि यह गतिविधि जोड़े में की जाए तो) और अर्थ निर्माण का प्रयास करेंगे। कुछ बच्चे पुस्तक 'पढ़ने का नाटक' कर सकते हैं या पुस्तक में कुछ शब्द पहचानने में सक्षम भी हो सकते हैं। समय के साथ, धीरे-धीरे उनका पठन अधिक सटीक होता जाएगा।

इसी तरह अगर कक्षा में बच्चों को उन विषयों पर लिखने या चित्र बनाने के मौके दिए जाएँ जिन पर कक्षा में चर्चा की जाती है तो वे लेखन के साथ प्रयोग करना शुरू कर देंगे। वे कोई चित्र बना सकते हैं या कुछ ऐसे अक्षर या शब्द लिख सकते हैं जिन्हें वे जानते हैं और यदि आप उनसे पूछें कि उन्होंने क्या लिखा है तो शायद वे आपके सामने उसकी विस्तृत और सुन्दर-सी व्याख्या प्रस्तुत कर दें! इस बिन्दु पर, उनकी वर्तनी को सुधारने के बजाय, उन्होंने जो कहा है उसे उनके लेखन के नीचे लिखा जा सकता है और उसे पुनः पढ़कर उन्हें सुनाया जा सकता है। पूरी कक्षा में बच्चों के लेखन को प्रदर्शित करें और उन्हें एक-दूसरे के काम को साझा करने और उसकी प्रशंसा करने का समय दें।

*कक्षा को प्रिंट से समृद्ध बनाएँ*

एक प्रिंट-समृद्ध कक्षा वह है जो सार्थक प्रिंट से भरपूर हो; बच्चों के लिए हो और उन्हीं के द्वारा रचित हो।[vi] बच्चों ने लेखन या ड्राइंग के जो प्रयास किए हैं, उन्हें भी कक्षा में रखा जा सकता है और कक्षा के विभिन्न स्थानों को कई भाषाओं में लेबल किया जा सकता है। शब्द, कविताएँ और अन्य जानकारी जो बच्चों के लिए रुचिकर हो या शिक्षण के लिए प्रासंगिक हो, उन सभी को प्रदर्शित करके पाठ और गतिविधियों के दौरान उनका उपयोग किया जा सकता है।

## अर्थ-निर्माण : भाषा की कक्षा का हृदय

इस पूरे लेख में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि बच्चे स्वाभाविक अर्थ-निर्माता हैं। जब हम उन्हें इस तरह से सिखाते हैं कि उन्हें अर्थ निर्माण में मदद मिले तो वे स्वाभाविक रूप से और आसानी से सीखते हैं। जब हम उबाऊ या असम्बद्ध तरीके से सिखाते हैं तो बच्चे या तो रुचि खो बैठते हैं या उन चीज़ों को सीखने के लिए काफ़ी संघर्ष करते हैं जो अन्यथा काफ़ी जल्दी सीखे जा सकते थे।

पिछले भागों में मैंने इस बात पर चर्चा की है कि बच्चों को अपने घर की भाषाओं में ख़ुद को व्यक्त करने, विचारों पर चर्चा करने और शुरुआती पढ़ने व लिखने में स्वतंत्र रूप से प्रयोग करने देने का कितना महत्त्व है। इन सभी से उन्हें भाषा सीखना सार्थक लगेगा। इसके अतिरिक्त बच्चों के साथ बातचीत करते समय अर्थ-निर्माण को केन्द्र में रखने के लिए हम कुछ और चीज़ें भी कर सकते हैं जैसे कि :

*सहजता से विचार व्यक्त करना*

जब बच्चे भाषा सीखने की प्रक्रिया के साथ सहज होने की कोशिश कर रहे होते हैं, उस समय हमारा ध्यान उन्हें अर्थ-निर्माण करने में मदद देना होना चाहिए। इसलिए जब वे जवाब दें तो पाठ्यपुस्तक की भाषा का ज्यों-का-त्यों उपयोग करना आवश्यक नहीं। उदाहरण के लिए छोटी बच्ची गीता, जिसका परिचय लेख की शुरुआत में करवाया गया था, बालभारती पाठ्यपुस्तक (महाराष्ट्र) से पढ़ी जा रही कविता पाऊस (वर्षा) सुन रही थी। कविता को सस्वर पढ़ने के बाद शिक्षक ने इसके बारे में सवाल पूछने शुरू किए। गीता स्वयं पाठ नहीं पढ़ सकती थी, लेकिन वह कक्षा की गतिविधि में ध्यान से भाग ले रही थी और कविता सुनकर अर्थ-निर्माण की कोशिश कर रही थी। हमने देखा कि गीता ने कई बार वार्तालाप में भाग लेने का प्रयास किया लेकिन शिक्षक ने उसे अनदेखा कर दिया क्योंकि वह पाठ की भाषा का प्रयोग नहीं कर रही थी। उदाहरण[vii] के लिए :

*शिक्षक : जब बारिश होती है तो आकाश में क्या होता है?*

*गीता : (बड़े जोश के साथ सबसे पहले उत्तर देती है): चकन चमकता (चमकती रेखाएँ)*

*अन्य बच्चे : वीज (बिजली के लिए कविता में दिया गया शब्द)*

*शिक्षक : सही उत्तर, वीज!*

गीता ख़ुद को रचनात्मक और सौन्दर्यपूर्ण रूप से व्यक्त कर रही थी और बताना चाह रही थी कि वह समझ गई है कि किस बात पर चर्चा की जा रही है, लेकिन गीता के पास मराठी बोलने वाले स्थानीय बच्चों की तरह के शब्द शायद नहीं थे। बार-बार शिक्षक (और अपने सहपाठियों) द्वारा नज़रअन्दाज़ किए जाने से गीता जैसे बच्चों को लग सकता है कि उनकी सोच ग़लत है, उपयुक्त नहीं है और फिर समय बीतने के साथ-साथ वे स्कूल की शिक्षा के साथ एक अलगाव सा महसूस करने लगते हैं।

*बच्चों को उन शब्दों को पढ़ने और लिखने देना जो उनके लिए सार्थक हैं*

हम छोटे बच्चों को एक विशेष क्रम में अक्षर पढ़ना और लिखना सिखाने पर इतना अधिक ध्यान देते हैं कि हम उन्हें उनके बोलचाल के शब्दों से दूर कर देते हैं क्योंकि इनमें से कई शब्दों में मात्राएँ और संयुक्त व्यंजन होते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चा *पानी* शब्द को जानता होगा, लेकिन उसकी हिन्दी

की पाठ्यपुस्तक में *जल* शब्द को पढ़ाए जाने की सम्भावना अधिक है क्योंकि इसमें कोई मात्रा नहीं है। LiRIL अध्ययन के दौरान हमने कर्नाटक में पाठों के एक सेट का अवलोकन किया, जहाँ बच्चों ने : राजा *(अरसा)*, आरा *(गरगसा)*, माला *(सरा)*, गड़गड़ ध्वनि *(गरगरा)* और एक त्यौहार (दशहरा) – जैसे शब्द सीखे क्योंकि इन शब्दों में समान अक्षर-समूह थे। फिर इन शब्दों को कृत्रिम रूप से एक साथ पिरो कर एक अनुच्छेद बनाया गया था जिसमें अधिकांश बच्चे बिल्कुल दिलचस्पी नहीं ले रहे थे क्योंकि इन शब्दों के बीच या शब्दों और बच्चों के जीवन एवं उनकी दिलचस्पी के बीच कोई मूलभूत सम्बन्ध नहीं था।

न्यूज़ीलैंड में माओरी बच्चों के साथ काम करने वाली प्रख्यात शिक्षक सिल्विया एश्टन-वार्नर (Sylvia Ashton-Warner, 1963) ने तर्क दिया कि अगर बच्चों को ऐसे शब्द दिए जाते हैं जिन्हें सीखने में उन्हें रुचि हो तो उन्हें पढ़ना और लिखना ज़्यादा जल्दी आता है। वे शब्दों को प्रस्तुत करने के लिए किसी विशेष क्रम की चिन्ता किए बिना बच्चे की ही रुचि के शब्द चुनकर, प्रत्येक बच्चे के लिए मुख्य शब्दावली बनाया करती थीं। एश्टन-वार्नर के इस विचार को अपनाते हुए, अलग-अलग बच्चों के लिए मुख्य शब्दावली शब्द कार्ड पर, और यदि कुछ शब्द कक्षा की सामान्य रुचि के हैं तो उन्हें कक्षा के चार्ट पर लिखा जा सकता है। बच्चों को अपने पढ़ने और लिखने में इन शब्दों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इस तरह वे अपनी रुचि का कुछ पढ़ेंगे, और लिखेंगे भी उन चीज़ों के बारे में जो उनके लिए मायने रखती हैं।

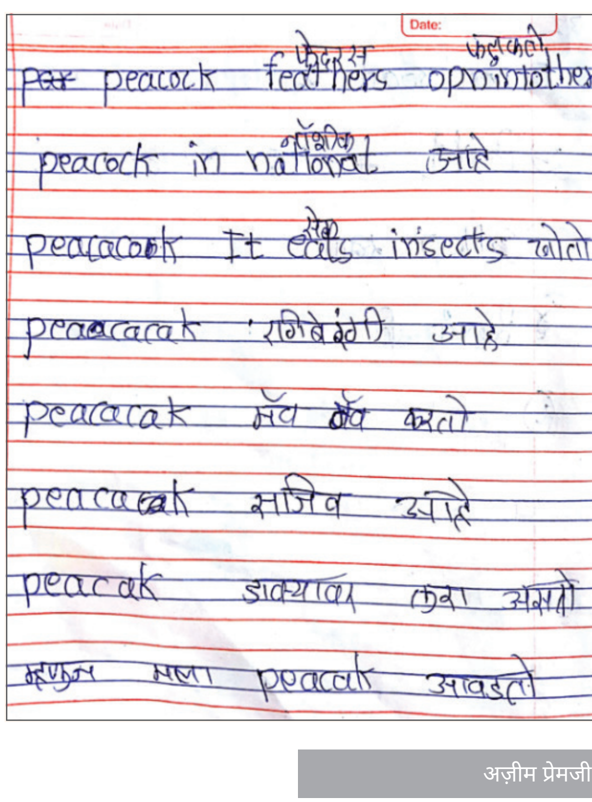
*प्रतिदिन ज़ोर से पढ़ना*

केवल पाठ्यपुस्तक पर निर्भर होने की बजाय, समृद्ध व दिलचस्प बाल-साहित्य कक्षा में लाएँ और उन्हें बच्चों को ज़ोर से पढ़कर सुनाएँ। आप बच्चों के सामने कहानी की क़िताबें या कविताएँ पढ़ सकते हैं और ऐसे विषयों पर कथेतर साहित्य भी पढ़ सकते हैं जिनके बारे में बच्चों के मन में जिज्ञासा है। बच्चों के साथ, उनमें आए विचारों पर चर्चा करें और उनकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करें। उनकी सोच और रुचियों में उनका साथ दें। इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे, बिना अपने विचारों और रुचियों को छोड़े, धीरे-धीरे क़िताबों और विचारों की दुनिया से परिचित होंगे। इस प्रकार वे अपने स्वयं के अनुभव से परे जाकर नई सोच, नए विचार, नई शब्दावली और ख़ुद को व्यक्त करने के नए तरीक़े सीखेंगे।

*लेखन को पाठ्यक्रम का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनाएँ*

जैसा कि पहले भी कहा गया है, भले ही बच्चे अक्षर या वर्तनी को सही ढंग से नहीं लिख पाते हों, लेकिन उन्हें अपने उभरते लेखन प्रयासों के माध्यम से ख़ुद को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।[viii] आप कई तरीक़ों से उनके प्रयासों का समर्थन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी फ़ील्ड-विज़िट के बाद आप उस पर गहन चर्चा कर सकते हैं और फिर बच्चों से कह सकते हैं कि वे उस भ्रमण के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखने में आपकी मदद करें। आप उनके लिए एक नमूना बना सकते हैं कि उन पंक्तियों को कैसे लिखें और बाद में उसे चार्ट पर लिखकर कक्षा में लगा सकते हैं ताकि बच्चे उसे बाद में दोबारा पढ़ सकें।

या आप बच्चों से कह सकते हैं कि आपने जो कहानी उन्हें पढ़कर सुनाई है, वे उसके पसन्दीदा हिस्से के बारे में बताएँ या लिखें। आप उनके किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को पत्र लिखने में



उनकी मदद कर सकते हैं जैसे - किसी दोस्त या माता-पिता को जो दूसरे शहर में जा बसे हैं, दादा-दादी को जो किसी दूसरे गाँव में रहते हैं या कोई और जिसके साथ वे जुड़े रहना चाहते हैं। आप उन्हें उनके समुदाय की किसी मौखिक कहानी या गीत को लिखने में भी मदद कर सकते हैं। समय के साथ-साथ, आप धीरे-धीरे उन्हें विभिन्न प्रकार के लेखन से परिचित करा सकते हैं जिसमें उन्हें आनन्द आए (कविताएँ, कहानियाँ इत्यादि)। इस प्रकार के लेखन आमतौर पर स्कूल में करवाए जाने वाले लेखन कार्य से बहुत अलग होते हैं!

मैंने इस पेचीदा समस्या के साथ इस लेख को शुरू किया था कि गीता जैसे बेहद बुद्धिमान और सक्षम बच्चे प्रारम्भिक भाषा की कक्षाओं में सीखने में असफल क्यों होते हैं? हो सकता है कि इस प्रश्न का उत्तर, इस छोटे से लेख में बताए गए उत्तर की तुलना में कहीं अधिक जटिल हो, लेकिन मुझे लगता है कि अगर छोटे बच्चों के लिए अधिगम को अधिक प्रासंगिक बनाया जाए तो यह समस्या काफ़ी हद तक हल हो सकती है। अगर कल्पनाशील तरीक़ों से पढ़ाया जाए तो प्रत्येक बच्चा सीख सकता है - और सीखेगा भी! मैंने ऐसा करने के लिए केवल तीन प्रमुख विचारों का सुझाव दिया है - बच्चों के घर की भाषाओं का स्वागत करना, भाषा सीखने के उनके उभरते हुए प्रयासों को प्रोत्साहित करना और अर्थ-निर्माण को भाषा की कक्षा के केन्द्र में बनाए रखना। मुझे यकीन है कि ज्यों-ज्यों शिक्षक, शिक्षार्थियों के लिए प्रासंगिकता बनाने की कोशिश करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे, त्यों-त्यों वे अन्य नए विचारों और योजनाओं के बारे में भी सोच पाएँगे!

## टिप्पणियाँ

i पहचान की रक्षा के लिए नाम बदल दिया गया है।

ii The Literacy Research in Indian Languages was a longitudinal research project that tracked over 700 students in Palghar district, Maharashtra, and Yadgir district, Karnataka as they moved from Grades 1-3. See Menon, S. et al. (2017). *Literacy research in Indian languages (LiRIL): Report of a three year longitudinal study on early reading and writing in Marathi and Kannada. Bangalore: Azim Premji University and New Delhi: Tata Trusts.*

iii For more ideas, please refer to Sinha, S. (2018). Creating spaces for the child's language within classrooms. Retrieved from: http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/ELI-Handout-2-Multilingualism-.pdf; and to Menon, S., Sinha, S., Das, H., & Pydah, A. (Eds.) (2019). *Multilingual education in India*. Hyderabad: Early Literacy Initiative, Tata Institute of Social Sciences.

iv See, Parikh, R., & Menon, S. (2019). Using mother tongue to facilitate English language learning in low exposure setting. Retrieved from: http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/ELI-Practitioner-Brief-18_Using-MT-to-Support-English-Language.pdf

v For a more complete discussion of this topic, see Sinha, S., Pydah, A., & Menon, S. (2019). Emergent liter-acy. Retrieved from: http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/ELI_Practitioner-Brief-16_Emergent-Literacy.pdf

vi More ideas about creating a print-rich classroom can be found at: Pydah, A. (2019). Creating a print-rich environment in the classroom. Retrieved: http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/ELI_Practioner_Brief_8_Print-rich-Environment-in-Classroom-1.pdf

vii From: Noronha, S. (2016). *Failing Meena* (Unpublished M.Phil dissertation). Hyderabad: Tata Institute of Social Sciences.

viii For more ideas on supporting children's writing, see Sinha, S., & Menon, S. (2019). Supporting children's writing in early grades. Retrieved: http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/Supporting-Childrens-Writing-in-Early-Grades_Practitioner-Brief_11.pdf; and Pydah, A. (2019). Children's writing: Creating books in the classroom. Retrieved: http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/Creating_Books_in_the_Classroom_ELI_Handout_7.pdf

***References***

Ashton-Warner, S. (1963/1986). Teacher. New York: Simon and Schuster.

Cummins, J. (2001). *Bilingual children's mother tongue: Why is it important to education?* 15-20.

Gee, J. (2003). *What videogames have to teach us about language and literacy*. New York: Palgrave, Macmillan.

Jhingran, D. (2009). Hundreds of home languages in the country and many in most classrooms – Coping with diversity in primary education in India. In T., Skutnabb- Kangas, R., Phillipson, A. K., Mohanty & M., Panda (Eds.), *Social justice through multilingual education*, (pp. 250–267). Bristol: Multilingual Matters.



**शैलजा मेनन** अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में भाषा, साक्षरता और बाल-साहित्य की फैकल्टी सदस्य के रूप में काम करती हैं। इससे पहले उन्होंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस, हैदराबाद में प्रारम्भिक साक्षरता पहल और महाराष्ट्र और कर्नाटक में एक अनुदैर्ध्य परियोजना, भारतीय भाषाओं में साक्षरता अनुसन्धान (LiRIL) का नेतृत्व किया है। शैलजा द्विभाषी बच्चों के साहित्य उत्सव, कथावना की संस्थापिका-एंकर हैं। उन्होंने हिन्दू लिटरेचर फॉर लाइफ अवार्ड्स फॉर चिल्ड्रेन लिटरेचर (2016-2018), और सर रतन टाटा ट्रस्ट के बिग लिटिल बुक अवार्ड (2016-2018) के लिए जूरी में काम किया है। शैलजा ने मिशिगन विश्वविद्यालय में अपनी पीएचडी पूरी की और कोलोराडो विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। उनके लेख अन्तर्राष्ट्रीय और भारतीय पत्रिकाओं में छपे हैं। वे बच्चों, शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों में भाषा, साहित्य और साक्षरता के प्रति लगाव उत्पन्न करने में रुचि रखती हैं। उनसे shailaja.menon@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल